



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश (असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्य शासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, सोमवार, 7 नवम्बर. 2005/16 कार्तिक, 1927

हिमाचल प्रदेश सरकार

पंचायती राज विभाग

आदेश

शिमला-171009, 21 मिनम्बर. 2005

संख्या पी० सी० एच०-एच० ए० (5) 4/2003.—यह कि ग्राम पंचायत, अग्धार, विकास खण्ड भीरज, जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश के अधि 1-4-2001 से 31-3-2003 तक के प्रकक्षेण-पत्र में श्रीमती सुलोचना देवी, प्रधान ग्राम पंचायत, अग्धार के विरुद्ध गम्भीर अनियमितताओं के मामले उद्धृत किये गये हैं;

यह कि उक्त अनियमितताओं में संलिप्त पाये जाने के कारण उपायुक्त, हमीरपुर द्वारा उन्हें हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 145 के अन्तर्गत दिनांक 1-3-2004 को निलम्बित कारण बताओ नोटिस जारी किया गया;

यह कि उन द्वारा दिये गये उक्त नोटिस के उत्तर को प्राधिकृत अधिकारी द्वारा असतोषजनक पाये जाने के फलस्वरूप उन्हें दिनांक 17-5-2004 को प्रधान, ग्राम पंचायत, अग्धार के पद से निलम्बित किया गया ;

यह कि आरोपों की वास्तविकता जानने हेतु हिमाचल प्रदेश, पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146 के अन्तर्गत उपायुक्त, हमीरपुर के कार्यालय आदेश संख्या-पी सी एच-एचएमअर (5) (ई) 1/2004-6801-08, दिनांक 27-9-2004 उप-मण्डलाधिकारी (ना०) हमीरपुर, जिला हमीरपुर को नियमित जांच सौंपी गई ;

यह कि जांच अधिकारी द्वारा प्रस्तुत जांच रिपोर्ट का अवलोकन करने उपरान्त निम्न तथ्य सरकार की समीक्षा आये ;

आरोप संख्या 1 : ग्राम पंचायत अधीन की सामान्य रोकड़ के पृष्ठ संख्या-62 जो कि पंचायत पदाधिकारियों के मानदेय वितरण से संबंधित है के क्रमांक 5 व 7 पर बाई पंचों सुखा देवी व रवि कुमार के हस्ताक्षर नहीं थे तथा उनके नाम से मू० 300.00 रुपये, मू० 300.00 रुपये की अदायगी दर्शाई गई थी। अंकेक्षण अवधि दिनांक 15-12-2003 से 22-12-2003 तक उक्त बाई पंचों को मानदेय की अदायगी नहीं हुई थी। रोकड़ वहीं अनुसार पंचायत पदाधिकारियों को मानदेय की अदायगी अंकेक्षण आपत्ति के पश्चात् ही हुई है।

आरोप संख्या 2 : पंचायत की सामान्य रोकड़ वहीं में वाउचर संख्या-43 के अन्तर्गत दिनांक 26-9-2002 को मतदाताओं के पहचान-पत्र बनाने वाले कर्मचारियों को खान-पान व्यय मू० 1,440.00 डाला गया है जो कि तर्क संगत नहीं है। प्रधान इस अवैध व्यय के लिए उत्तरदायी हैं।

आरोप संख्या 3 : ग्राम पंचायत रोकड़ वहीं में दिनांक 31-11-2002 को वाउचर संख्या 60 जो मुरम्मत दवाकरा हाऊस नाहलवी मस्ट्रोल माम 11/2002 मू० 627.50 रुपये का है, में श्री परमानन्द पुल श्री बफी राम व श्री राम राखा पुल श्री थलिया राम की हजाररी दिनांक 5-11-2002 से 9-11-2002 तक लगी है तथा यही व्यक्ति वाउचर संख्या-64 मुरम्मत पंचायत घर मस्ट्रोल माह 11/2002 जो मू० 1805 रुपये का है में भी दिनांक 5-11-2002 से 14-11-2002 तक दर्ज थी जिस अंकेक्षण आपत्ति उपरान्त रिकार्ड में हेराफेरी कर 5 से 10 तक की हजाररी काट दी गई है तथा इन व्यक्तियों की 15 से 20 तक हजाररी लगा दी गई है। इस प्रकार प्रधान द्वारा इन दोनों व्यक्तियों को एक ही समय में भिन्न-भिन्न कार्यों पर उपस्थिति दर्शाकर सरकारी धनराशि का छलहरण/दुरुपयोग किया है।

आरोप संख्या-4 : पंचायत की रोकड़ वहीं को जांच प पाया गया है कि वर्ष 2001-2002 के दौरान राशन कार्ड की बिक्री में केवल मू० 520.00 रुपये की ही आय हुई है जबकि राशन कार्ड खरीदने पर मू० 850.00 रुपये व्यय किये गये थे। इस प्रकार मू० 330.00 रुपये की पंचायत निधि की क्षति हुई है जिसके लिए प्रधान दोषी है।

आरोप संख्या 5 : ग्राम पंचायत की रोकड़ वहीं में वाउचर संख्या-65,66 के अन्तर्गत दिनांक 8-11-2001 को मटीरियल खरीद व ढुलाई का व्यय क्रमशः मू० 6,000 रुपये व मू० 1,100 रुपये पंचायत ढाँचे के रख-रखाव हेतु डाला गया है। इसी तरह वाउचर संख्या-66, 67 व 68 के तहत दिनांक 16-12-2002 को ही पंचायत ढाँचे के रख-रखाव हेतु क्रमशः मू० 3,200, 800.00, 800.00 रुपये खरीद मटीरियल व ढुलाई का व्यय दर्ज है। इन वाउचरों में न तो यह बताया गया है कि मटीरियल उपयोग हुआ है। यदि कहीं कार्य किया गया है तो उसका मूल्यांकन करवाया जाना अनिवार्य था। अतः इस मामले में भी मू० 11,900 रुपये के छलहरण की प्रधान की पूर्ण रूप से सलिप्तता सिद्ध होती है।

आरोप संख्या 6 : स्वर्ण त्रयन्ती ग्राम राजगार योजना के तहत दिनांक 15-8-2002 को प्रधान द्वारा मू० 1,300 रुपये बैंक में निकाल कर अंकेक्षण समय तक इस राशि को पंचायत रोकड़ में दर्ज करवाकर मौफा नहीं गया था। इस रोकड़ की जांच करने पर पाया गया कि मू० 1,300 रुपये की जबरदस्ती इन्ट्रान कर दिनांक 3-9-2002 को व्यय वाउचर दर्शाये गये है तथा इन वाउचरों पर भी ओवरराईटिंग की गई है। अतः इस मामले में भी मू० 1,300 रुपये के छलहरण के लिए प्रधान दोषी है।

आराम संख्या-7 स्वर्ण जयन्ती ग्राम रोजगार योजना कैंब बूक पृष्ठ-64 दिनांक 3-8-2002 का निर्माण रास्ता आधार व निर्माण रास्ता ताहिलवा के वाउचर संख्या-6 व 11 के अवलोकन में 15-15 वर्ग मीटर की अवधि की कमियाँ: मू० 2,415 रुपये व मू० 2,415 रुपये की प्राप्ति रसीद पर प्रधान के हस्ताक्षर है जहाँ कर्मियों में मि० मामदाधिक केन्द्र आधार (गोपा) के जनरल खाने से मू० जी० आर० वाई० खाने में सीमेंट स्टॉक पड़ा खराब हो रहा है उसे निर्माण रास्ता ताहिलवा (कुलाडी) के लिए दिया, ऐसा लिखा है। जिसमें स्पष्ट है कि प्रधान ने ही यह राशि अवैध तौर पर प्राप्त की है क्योंकि प्रधान सीमेंट विक्रेता नहीं था और न ही बतौर ठेकेदार कोई सामान बेच सकती है।

आराम संख्या 8 11 वे वित्तियोग के अन्तर्गत जो स्क्रीम ग्राम गभा द्वारा प्रस्ताव संख्या-6 दिनांक 7-10-2001 अन्तर्गत कार्यान्वयन हेतु पारित की थी, प्रधान ने स्वीकृत राशि को इन स्क्रीमा पर व्यय न करके ग्राम पंचायत द्वारा पारित प्रस्ताव संख्या-6 दिनांक 15-12-2001 जो कि अवैध है, राशि को पंचायत घर की उपरली मंजिल सम्बन्धी कार्य पर व्यय किया। इस बारे में ग्राम गभा ने स्क्रीम का बदलने बारे कोई स्वीकृति नहीं ली गई है यह ग्राम गभा के अधिकार क्षेत्र की उल्लंघना है। इस प्रकार प्रधान ने अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाही बरती है।

आराम संख्या 9: ग्राम सभा बैठक दिनांक 1-7-2001 की कार्यवाही के पृष्ठों की छाया प्रतिया प्रस्तुत की गईं उनमें प्रस्ताव संख्या-9 के साथ जगह खाली तथा जहाँ बैठक की कार्यवाही बंद की गई है वहाँ पर प्रस्ताव संख्या 10 स्वेच्छा से जोड़ा गया है। इस बारे में पंचायत की कार्यवाही रजिस्टर की जांच की गई परन्तु जहाँ पर प्रस्ताव संख्या-8 के आगे पृष्ठ ही गायब है। इस प्रस्ताव के आगे बैठक की कार्यवाही बन्द नहीं है जिसमें स्पष्ट ज्ञान होता है कि कार्यवाही रजिस्टर में इसके आगे के पृष्ठ ही फाड़ कर गायब कर दिये हैं। अतः इन अवैध प्रस्तावों का वास्तविक प्रधान पर है। रिक्वायर्स में छिड़-छाड़ के लिए सचिव भी जिम्मेदार है।

यह कि उपरोक्त जांच रिपोर्ट का बारीकी से अध्ययन करने उपरान्त श्रीमती मुलावना देवी प्रधान, ग्राम पंचायत आधार द्वारा सरकारी धनराशि का दुरुपयोग व अनियमितताओं में मलिन ज्ञान मित्र पाया गया जिसके फलस्वरूप उन्हें सरकार द्वारा दिनांक 18-8-2005 को हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146 के अन्तर्गत प्रधान पद से निष्कासित करने से पूर्व निष्कासनार्थ कारण बताओ नोटिस जारी किया गया।

यह कि श्रीमती मुलावना देवी, प्रधान, ग्राम पंचायत, आधार से उक्त कारण बताओ नोटिस का उत्तर दिनांक 3-8-2005 को प्राप्त हुआ। उक्त प्रधान से प्राप्त उत्तर में सरकार संतुष्ट नहीं हुई, क्योंकि उत्तर तथ्यों पर आधारित नहीं है जिसके फलस्वरूप उन्हें हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146 (1) के अन्तर्गत विभिन्न वित्तीय अनियमितताओं तथा अपने कर्तव्य निर्वहन में दोषी पाये जाने के कारण उन्हें प्रधान पद से हटाया जाना उचित है।

अतः राज्यपाल हिमाचल प्रदेश उन शक्तियों के अधीन जो उन्हें हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146 (1) के अन्तर्गत प्रदत्त है का प्रयोग करते हुए श्रीमती मुलावना देवी, प्रधान, ग्राम पंचायत, आधार को उक्त कृत्य के लिए प्रधान पद से तुरन्त निष्कासित किया जाता है तथा उन्हें छ. वर्ष की कालावधि के लिए उक्त अधिनियम उक्त की धारा 146 (2) के अन्तर्गत पंचायत के पदाधिकारी के रूप में निवोधन के लिए निरहित किया जाता है।

शिमला-171 009, 22 सितम्बर, 2005

संख्या पी० सी० एच०-एच०एच० (5) 16891-97 —जहाँ उपायुक्त, कांगड़ा स्थित धर्मशाला द्वारा श्रीमती निमला देवी, प्रधान, ग्राम पंचायत, भगैतर को निर्माण रास्ता पी० डब्ल्यू० डी० गड़क से पृथोतम चन्द के घर से

मु० 5,831/- रुपये की सरकारी धनराशि के दुरुपयोग के आरोप में दिनांक 24-5-2004 को प्रधान ग्राम पंचायत, भगैतर के पद से निलम्बित किया गया था;

जबकि मामले की वास्तविकता जानने हेतु हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146(1) के अन्तर्गत उपायुक्त कांगड़ा द्वारा उनके कार्यालय के पत्र संख्या पंच-के० जी० आर०-ई (15) 8/91-4488-93, दिनांक 4-9-2001 द्वारा नियमित जांच खण्ड विकास अधिकारी, सुलह, जिला कांगड़ा को माँपी गई;

जबकि जांच अधिकारी द्वारा की गई विस्तृत जांच रिपोर्ट उपायुक्त कांगड़ा से उनके कार्यालय पत्र संख्या पी० सी० एच०-के० जी० आर०-ई (15) 42/91-681, दिनांक 27-5-2005 के अन्तर्गत निदेशालय में प्राप्त हुई तथा जांच रिपोर्ट में दर्शाए गए तथ्यों का बरीकी से अध्ययन करने उपरान्त सरकार के ध्यान में आया कि ग्राम पंचायत भगैतर को वर्ष 2002-03 में निर्माण रास्ता मुख्य सड़क से पुरुषोत्तम के घर हेतु मु० 50,000/- रु० अनुदान स्वीकृत हुआ था तथा मु० 36,668/- रु० इस कार्य के लिए विकास खण्ड कार्यालय से जारी किए गए थे। प्रधान द्वारा निर्माण कार्य पर मु० 36,658/- रु० व्यय किया गया है परन्तु तकनीकी अधिकारी द्वारा कार्य का मूल्यांकन 30,837/- रु० आँका गया। इस प्रकार प्रधान द्वारा मु० 5,831/- रुपये की राशि का दुरुपयोग किया है। यद्यपि अब प्रधान, ग्राम पंचायत भगैतर द्वारा दिनांक 9-2-2005 को 5,831/- रुपये की वसूली योग्य राशि को रसीद संख्या 23 अनुसार सभा निधि में जमा कर दी है;

और जबकि प्रधान, ग्राम पंचायत भगैतर ने भले ही समस्त राशि पंचायत निधि में जमा कर दी है परन्तु फिर भी श्रीमती निर्मला देवी, प्रधान को कर्तव्य निर्वहन में लापरवाही के आरोप से दोषमुक्त नहीं किया जा सकता। जिसके दृष्टिगत इस मामले में सरकार द्वारा नरम रवैया अपनाने हुए श्रीमती निर्मला देवी प्रधान, ग्राम पंचायत भगैतर को भविष्य में अपने कर्तव्य निर्वहन में लापरवाही न बरतने हेतु सचेत करने का निर्णय लिया है।

अतः राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश उन शक्तियों के अधीन जो कि उन्हें हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 145(6) के अन्तर्गत प्रदत्त हैं का प्रयोग करते हुए श्रीमती निर्मला देवी, प्रधान, ग्राम पंचायत, भगैतर, विकास खण्ड सुलह को भविष्य में अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहने के सहर्ष आदेश देते हैं।

शिमला-171 009, 3 अक्तूबर 2005

संख्या-पी० सी० एच०-एच० ए० (5) सुंगरा-17483-89.—यह कि श्री हरबंस सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा, विकास खण्ड निचार, जिला किन्नौर को उपायुक्त, किन्नौर द्वारा उप-मण्डलाधिकारी (ना०) निचार द्वारा की गई छानबीन तथा अंकेक्षण में पाई गई विभिन्न वित्तीय अनियमितताओं के दृष्टिगत दिनांक 6-7-2004 को प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा के पद से निलम्बित किया गया;

यह कि उपायुक्त, किन्नौर द्वारा मामले की वास्तविकता जानने हेतु हिमाचल प्रदेश, पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146(1) के अन्तर्गत जिला पंचायत अधिकारी, किन्नौर को जांच अधिकारी नियुक्त कर जांच माँपी गई

यह कि जांच अधिकारी द्वारा की गई विस्तृत जांच रिपोर्ट उपायुक्त, किन्नोर क माध्यम में दिनांक 21-7-2005 को निदेशालय में प्राप्त हुई तथा प्राप्त जांच रिपोर्ट में दर्शाये गये तथ्यों का बारीकी से अध्ययन करने उपरान्त जो आरोप उनके विरुद्ध मिट्टे पाये गये हैं, उनका विवरण निम्न है :—

भाग-क

उप-मण्डलाधिकारी (ना0) निचार द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर आधारित आरोपों की जांच :

1. दिनांक 6-6-2000 को जय प्रकाश इण्डस्ट्रीज लि0 में मु0 3,00,000 रुपये प्राप्त हुआ था जिसमें से दिनांक 12-6-2000 को चैक नम्बर-85581 सहकारी बैंक भावानगर में मु0 1,25,000 रुपये का सामान खरीद के लिए निकामी दिखाई गई है परन्तु कैश बुक व वाउचर के अवलोकन से पाया गया कि मु0 4,760 रुपये प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा द्वारा दिनांक 9-7-2000 तक अनाधिकृत रूप से अपने पास रखा। वाउचर के अवलोकन से पाया गया कि ग्राम डमरिंग, थानग व वारों के लिए बिजली का सामान खरीदा गया है। वाउचर भी जाली प्रतीत होते हैं। इसके पश्चात् दिनांक 6-10-2000 को भी मुबलिंग 40,080 रुपये का सामान गांव राकंपा में बिजली के ऊपर खर्च किये दर्शाये हैं वाउचर नम्बर-444, 445 446 दिनांक 12-6-2000 व वाउचर नम्बर-448, दिनांक 6-10-2000 के मृताधिक सामान में 0 नेगी कमिश्नियल सेंटर भावानगर से ग्रह किया गया है जो कि जाली प्रतीत होते हैं। निरीक्षक आवकारी एवं कराधान निचार की रिपोर्ट से स्पष्ट होता है कि दिनांक 12-6-2000 को मु0 नेगी कमिश्नियल सेंटर ने बिजली का सामान बेचा ही नहीं है केवल कैश मैमों ही बनाये हैं। क्योंकि मेलज टैक्स रजिस्टर में इन कैश मैमों का इन्द्राज नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि वाउचर मिली भगत में जाली बनाये गये हैं तथा मांका पर इतना भारी कार्य नहीं किया गया है। रोकड़ बही की जांच में भी आरोप सत्य पाया गया है तथा सचिव, ग्राम पंचायत सुंगरा ने भी इस बात की पुष्टि की है। मुबलिक 4,760 रुपये की पंचायत निधि को इतने समय तक अकारण अपने पास रखना वित्तिय नियमों की उल्लंघना है व आपत्तिजनक है। निरीक्षक आवकारी एवं कराधान निचार की रिपोर्ट के अवलोकन के पश्चात् यह आरोप सत्य प्रमाणित होता कि मु0 नेगी कमिश्नियल सेंटर ने उपरोक्त सामान बेचा ही नहीं है। ग्राम डमरिंग, थानग व वारों में स्ट्रीट लाईटों की जांच हेतु मांका पर जांच निरीण भी किया गया उसके अनुसार कुल 131 स्ट्रीट लाईटें लगाई गई थी जिसमें से केवल 7 चालू हालत में है।
2. दिनांक 20-4-2003 को प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा द्वारा मु0 35,000 रुपये का आहरण कर अनाधिकृत रूप से अपने पास रख कर सरकारी धनराशि का दुरुपयोग किया है जोकि आपत्तिजनक व नियमों के विरुद्ध है।
3. दिनांक 20-8-2003 को मु0 25,000 रुपये की धनराशि की निकासी दिखाई गई है जिसका कोई भी हिसाब अभिलेखों/रिकार्ड में उपलब्ध नहीं है इस बात की पुष्टि रोकड़ बही के अवलोकन से की गई तथा सचिव, ग्राम पंचायत सुंगरा द्वारा भी प्रमाणित किया गया है।
4. प्रधान, ग्राम पंचायत, सुंगरा द्वारा अपनी निजी गाड़ी से शौचालय निर्माण भावानगर के लिए दिनांक 3-9-2003 को मु0 20,000 रुपये वावत सीमेंट, रेत, बजरी शौचालय निर्माण भावानगर के लिए निकासी की है। वाउचर पर प्रधान के हस्ताक्षर हैं व गाड़ी नम्बर एच0 पी0-26-230 अंकित है जो प्रधान की निजी गाड़ी है। जो कि आपत्तिजनक है क्योंकि इस कृत्य से प्रधान द्वारा अपने हित में स्वरोजगार उत्पन्न किया है। इस बात की पुष्टि सचिव, ग्राम पंचायत सुंगरा ने की है तथा सी0 जे0 एम0 कोर्ट में पड़े रिकार्ड की जांच से इस आरोप की पुष्टि की गई है।
5. श्री हरबन्स सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा को उपायुक्त द्वारा दिनांक 1-9-2003 को अयोग्य घोषित किया गया था परन्तु इसके बावजूद भी दिनांक 3-9-2003 को श्री हरबन्स सिंह व सचिव के

हस्ताक्षर से म 0 70,000 रुपये का आहरण व वितरण किया गया है जाकि वह पैसा करने में सक्षम नहीं थे ।

6. वाउचर नम्बर-5 मु 0 12,000 रुपये पत्थर तुड़ाई के तीर्थ बहादुर मार्फत श्री हरबंस सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा को अदायगी दिखाई गई है परन्तु प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर रसीद पर नहीं हैं तथा न ही रसीदी टिकट लगाया गया है जिससे स्पष्ट है कि मु 0 12,000 रुपये का फर्जी वाउचर तैयार किया गया है । रिकार्ड की जांच से यह आरोप सत्य पाया गया ।
7. केंश में मु 0 466, दिनांक 10-7-2000 को मु 0 नेगी कर्मशियल सेंटर भावानगर द्वारा 70 बैंग मीमेंट ग्रान पंचायत, सुंगरा के लिए विक्रय किया गया दिखाया गया है तथा राशि, की अदायगी प्रधान, ग्राम पंचायत, सुंगरा द्वारा प्रमाणित की गई वाउचर फर्जी तैयार किया गया प्रतीत होता है क्योंकि उक्त कार्य का केंश में मु 0 444, 445 व 446, दिनांक 12-6-2000 तथा केंश में मु 0 448, दिनांक 6-10-2000 का है जिसमें प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा ने त्रिशूलो का सामान क्रय किया दर्शाया है जिसको विस्तृत टिप्पणों आरोप संख्या-1 पर है । रिकार्ड के अवलोकन व छानबीन में यह आरोप सही पाया गया है ।
8. वाउचर संख्या-8, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा द्वारा मु 0 2940 रुपये को राशि की फर्जी अदायगी दर्शाई है क्योंकि प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर ही नहीं है । रसीद पर प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर न होना आपत्तिजनक है । मन्चिव, ग्राम पंचायत सुंगरा ने भी इस आरोप को स्वीकार किया है ।
9. दिनांक 8-8-2000 को ग्राम पंचायत, सुंगरा की बैठक हुई कार्यवाही रजिस्टर के पृष्ठ संख्या-101 पर प्रस्ताव संख्या-2 व प्रस्ताव संख्या-4 वारे टिप्पणों नहीं है इसी प्रकार पृष्ठ संख्या-117 पर प्रस्ताव संख्या-2 आय व्यय वारे अगूरो टिप्पणों अंकित है आधा पृष्ठ खाली छोड़ा गया है इसके अतिरिक्त पृष्ठ संख्या-119, 120, 121 व 122 भी रिक्त छोड़े गये हैं दिनांक 20-6-2001 को ग्राम पंचायत सुंगरा की मासिक बैठक में प्रस्ताव संख्या 13 जो कि पृष्ठ 168 पर अंकित है में आय व्यय वारे वर्णन है । परन्तु काफी जगह खाली छोड़ी गई है । पृष्ठ संख्या-182 भी आधा खाली छोड़ा गया है कार्यवाही के दूसरे रजिस्टर जो दिनांक 20-12-2001 से आरम्भ किया गया है के पृष्ठ संख्या-13 व 14 खाली छोड़े गये हैं । दिनांक 3-11-2002 को कार्यवाही प्रस्ताव संख्या-6, पृष्ठ संख्या-86 व 87 भी खाली छोड़े गये हैं जबकि इन पृष्ठों पर प्रधान के द्वारा प्रस्ताव भोजूद है । पृष्ठ संख्या-167 आधा व 168 पूर्ण खाली छोड़े गये हैं । दिनांक 5-8-2003 प्रस्ताव संख्या-2 जिसमें आय व्यय का वर्णन दर्ज है भी बाद में अंकित किया गया है और आधा पृष्ठ खाली छोड़ा गया है । इसी प्रकार प्रस्ताव संख्या-5 आय व्यय विवरण प्रस्ताव संख्या-9 आय व्यय सत्यापन भी बाद में दूसरी स्याही से जोड़ कर अनियमितता की है । इस प्रकार दिनांक 20-8-2003 की कार्यवाही पृष्ठ 177 पर अंकित है । जिसमें पृष्ठ संख्या 179 तक किसी अन्य व्यक्ति ने कार्यवाही अंकित की है जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि कार्यालय अभिलेखों में सरकारी धन राशि के आहरण एवं वितरण का ब्यौरा बाद में दर्ज किया गया है । इसी प्रकार दिनांक 5-10-2003 को ग्राम समा सुंगरा की तृतीय बैठक पृष्ठ संख्या-183 से 185 तक अंकित है परन्तु प्रस्ताव संख्या-4 पृष्ठ संख्या-184, 185, 186, 187 व 188 पूर्ण रूप से खाली छोड़े गये हैं । यह आपत्तिपूर्ण अन्वेषण में भी पाई गई है । कार्यवाही रजिस्ट्रों के पृष्ठों को खाली अथवा आधा खाली रखने से बिना चर्चा अपनी मर्जी से मद व प्रस्ताव लिखने की आशंका बनी रहती है जो कि अशोकाचारिक व नियमों के विरुद्ध है ।
10. स्वर्ण जयन्ती ग्रामीण राजगार योजना के वाउचर नम्बर-5 दिनांक 5-5-2003 जिनके द्वारा चार गाड़ी रेटा की कीमत की अदायगी मुवलिंग 12,000 रुपये श्री शिव कुमार पुत्र श्री मन्थ राम निवासी सुंगरा को ददनगर से सुंगरा किया गया है इसी प्रकार वाउचर नम्बर-18, दिनांक 6-5-2003 द्वारा दो गाड़ी रेटा की अदायगी मुवलिंग 6,000 रुपये श्री हरीश चन्द पुत्र श्री डौ 0 एन 0 नेगी

निवासी ग्राम पंचायत निचार को भी दतनगर से मुंगरा का किया है, वाउचर नम्बर-21 जिसके द्वारा दो गाड़ी रेटा की कीमत मु० 6,000 रुपये दिनांक 8-5-2003 को श्री दिनेश कपिल पुत्र श्री हेम राज कपिल निवासी ग्राम भावानगर की गई है। परन्तु यह नहीं दर्शाया गया है कि यह रेटा कहाँ से लाया गया है। वाउचर नम्बर-57 व 59, दिनांक शून्य के द्वारा श्री दिनेश कपिल ग्राम भावानगर को मु० 3,000 रुपये एक गाड़ी की अदायगी की गई है। उपरोक्त रेटा की सारी गाड़ी दतनगर से लाई गई है। यह कानिसे गौर है कि भावानगर में रेत खान मौजूद है तथा फिर भी रेटा दतनगर से लाया गया है। इसमें स्पष्ट होता है कि प्रवात, ग्राम पंचायत मुंगरा ने सरकार की धनराशि का पूर्ण दुरुपयोग किया है।

11. विलेज एजुकेशन कमेटी की नस्ति से पाया गया कि वाउचर नम्बर-1, दिनांक 6-4-2003 को श्री मन्त बहादुर पुत्र श्री कर्ण बहादुर निवासी भावानगर को दो रुपये प्रति पत्थर के हिमाव में मु० 25,000/- रुपये की रसीद बनाई गई है। इतनी भारी भरकम राशि की अदायगी फर्जी प्रतीत होती है। दिनांक 20-7-2003 को कार्यवाही रजिस्टर ग्राम पंचायत मुंगरा का प्रस्ताव संख्या-9 विभिन्न कार्य योजनाओं के वाउचरों के सत्यापन का इन्द्राज दूसरी स्याही व कर्मचारी द्वारा अंकित है बाद में कार्यवाही बन्द नहीं की गई है इस इन्द्राज हेतु मु० 49,800/- रुपये के लिए बाद में प्रस्ताव अंकित किया गया है जो नियमों के विरुद्ध है।

भाग-ख

जिला पंचायत अधिकारी के अंकेक्षण दल द्वारा समीक्षा रिकार्ड पर आधारित जांच रिपोर्ट

1. अंकेक्षण अवधि में विकास कार्य के लिए कय की गई मामग्री रेटा, सीमेंट, ईट पत्थर, चादरें इत्यादि कय करने से पूर्व कुटेशन नहीं ली गई है जो कि नियमों के विरुद्ध है इस बात की पुष्टि सचिव, ग्राम पंचायत मुंगरा ने भी की है।
2. दिनांक 30-6-2003 रोकड़ पृष्ठ 122 राशि मु० 30,262/- रुपये भवन निर्माण उप-खजाना निचार मस्ट्रोल नं० 59 मास 5/2003 दर्ज रोकड़ है जिसमें 16 मजदूर कार्यरत थे, क्रम संख्या-2 विनोद पुत्र लाल बहादुर की मजदूरी मु० 2437.50 पैसे बनती है प्राप्ति रजिस्टर पर प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर नहीं है जिससे प्रतीत होता है कि उक्त मजदूर को मजदूरी नहीं मिली है। क्रम संख्या-1 पर बाबू राम पुत्र डण्डा वीर मेट को 30 दिनों का मु० 81.25 पैसे की दर से 30 दिन की मजदूरी मु० 2437.50 पैसे दी गई है जबकि मेट की दर 63.75 पैसे के हिसाब से मु० 1912.50 बनती है इस प्रकार मु० 525.00 रुपये की अधिक दिए गये हैं।
3. दिनांक 5-7-2003 रोकड़ पृष्ठ 125 राशि मु० 6196/- रुपये निर्माण पक्का रास्ता आत्म प्रकाश के मकान से चेत राम के मकान तक मस्ट्रोल मास जन, 2003 दर्ज रोकड़ है जिसमें 18 मजदूर कार्यरत थे। मजदूरों की हाजरी 18 तारीख तक लगाई गई है। क्रम संख्या-1 लक्ष्मण सिंह पुत्र श्री धनी राम, क्रम संख्या-2 श्री आत्म प्रकाश पुत्र श्री लफवन्तर, क्रम संख्या-7 श्रीमती आकुर दासी पत्नी श्री मारन सिंह को 19 तारीख की वैतनिक अवकाश की मजदूरी दी गई है जब मस्ट्रोल में कार्य 18 तारीख तक किया गया है तो क्रम संख्या-1, 2 व 7 को वैतनिक अवकाश की मजदूरी क्यों दी गई, जो कि अवैध है तथा मु० 208.75 पैसे की राशि का दुरुपयोग किया गया है।
4. दिनांक 30-4-2003 रोकड़ पृष्ठ-121 राशि 12,445/- रुपये निर्माण कार्य शास्त्री के घर से देवर राम के घर तक मस्ट्रोल संख्या-1096/57 में दिनांक 1-5-2003 से 31-5-2003 तक जारी किया है, मस्ट्रोल में कुल 13 मजदूर कार्यरत थे क्रम संख्या 1, 2, 4 से 7 व 9 से 13 की हाजरियां मस्ट्रोल में एक तारीख से लगी हैं जबकि क्रम संख्या-3 मिस्त्री लाल बहादुर पुत्र श्री चिंगवान व क्रम संख्या-8

हुम बहादुर पुत्र नवराज की हाजरिया 6 तारीख से लगी है इस प्रकार मस्ट्रोल में क्रम संख्या-4 से 7 व 9 से 13 की हाजरिया पहले आनी थी व क्रम संख्या-3 व 8 की हाजरिया बाद में आनी थी। अतः स्पष्ट है कि मस्ट्रोल मौका पर तैयार नहीं किया जाता है जो कि अनियमितता है। क्रम संख्या 4 से 7 व 9 से 13 की 5/5 दिन की हाजरिया अवैध है जिससे स्पष्ट होता है कि मु० 2886.75 पैसे की धनराशि को दुरुपयोग किया गया है।

5. दिनक 5-7-2003 रोकड़ पृष्ठ राशि मु० 15,000 रुपये निर्माण कार्य राजकीय प्राथमिक पाठशाला सुगरा कैंस मैमों/रसीद कपिला ब्रदर्स 3000 ईट की अदायगी दर्ज रोकड़ है परन्तु व्यय प्रमाणित नहीं है।
6. दिनांक 27-1-2004 रोकड़ पृष्ठ 132 राशि मु० 8500/- रुपये मानदेय पंच दर्ज रोकड़ दिखाया गया है पंच श्रीमती जंगमनी को दिनांक 1-4-2003 से 30-11-2003 तक का मु० 1,200/- रुपये दिये गये परन्तु प्राप्ति पर हस्ताक्षर नहीं हैं।
7. रोकड़ वही तथा कार्यवाही पुस्तिका के निरीक्षण के उपरांत पाया गया कि रोकड़ पृ० 118, दिनांक 30-4-2003 को मु० 4,575 रुपये तथा 1800.00/- रुपये की राशियों को व्यय करने हेतु आवश्यक वाउचर पंचायत द्वारा पारित नहीं करवाये गये। रोकड़ वही के पृ० 122, दिनांक 30-6-2003 में दर्ज मु० 24,000/- रुपये की राशि का व्यय करने हेतु मस्ट्रोल संख्या-275 के प्रति स्वीकृति नहीं ली गई। इसी तरह पृ० 124 दिनांक 5-7-2003 पर दर्ज राशियों मु० 10,000, 6,000 रुपये 4,000/- रुपये 760/- रुपये तथा 14,240/- रुपये के वाउचर व्यय करने की स्वीकृति नहीं ली गई है जबकि पृ० 125 व 127 दिनांक 5-7-2003 व 31-8-2003 को दर्ज क्रमशः मु० 1811/- रुपये व 850/- रुपये के वाउचर व्यय करने की स्वीकृति भी नहीं ली गई है।
8. अंकेक्षण पत्र के पैरा नं० 2 (ख) क्रम संख्या 13 व 14 निम्न सभी राशियों का व्यय पंचायत प्रस्ताव नं० 2, दिनांक 5-11-2003 व प्रस्ताव संख्या-9, दिनांक 20-8-2003 को कार्यवाही में पारित किया गया है। कोरम 3/9 व 5/10 का था जो कि पूर्ण न था। अतः दिनांक 30-6-2003 को रोकड़ पृ० 121 अनुसार मु० 9100/- रुपये, रोकड़ पृ० 122 पर 4146/- तथा 11,700/- रुपये तथा दिनांक 5-7-2003 को रोकड़ पृ० 123 अनुसार मु० 3,000, 8,175/- रुपये 3,600/- रुपये 9,000/- रुपये, 17,000/- रुपये 400/- रुपये, 3,600/- रुपये तथा रोकड़ पृ० 124 अनुसार मु० 2,700/- रुपये, 17,000/- रुपये, 6,000/- रुपये तथा मु० 700/- रुपये का व्यय अवैध है।
9. अंकेक्षण पत्र के पैरा-2 ख क्रम संख्या 18 में दिये गये दिनांक को कार्यवाही रजिस्टर में पृष्ठ संख्या के कुछ पन्ने खाली जोड़े गये जो कि नियमाविरुद्ध है। इस आरोप की जांच हेतु सम्बन्धित कार्यवाही पुस्तिकाओं का निरीक्षण किया गया तथा जांच के उपरांत पाया गया कि पृष्ठ संख्या-101, दिनांक 8-8-2000 का प्रस्ताव संख्या-2 में आधा पृष्ठ, पृष्ठ संख्या-119 से 122 (दिनांक 4-11-2000), पृष्ठ संख्या-177 व 178 (दिनांक 1-7-2001) रजिस्टर कार्यवाही-11 के पृष्ठ संख्या-13 व 14 (दिनांक 20-1-2002) पृष्ठ संख्या-86 व 87 (दिनांक 3-11-2002) तथा पृष्ठ संख्या-167 व 168 (दिनांक 6-7-2003) पूर्णतः खाली रखे गये हैं जबकि पृष्ठ संख्या-183 से 185 (5-8-2003) तथा पृष्ठ संख्या 186 से 188 (दिनांक 5-8-2003) पूर्णतः खाली रखे गये हैं। इनका विवरण जांच रिपोर्ट के भाग-क में आरोप संख्या-9 में दिया गया है इस प्रकार कार्यवाही रजिस्ट्रों के पृष्ठों को खाली रखा जाना अत्यन्त आपत्तिजनक एवम् नियमाविरुद्ध है।
10. अंकेक्षण पत्र के पैरा संख्या-8 क्रम संख्या-2, श्री हरबंस सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत के पास मु० 20,000/- रुपये कैंस वही पृष्ठ संख्या-128, दिनांक 3-9-2003, मु० 35,000/- रुपये कैंस बुक पृष्ठ-13, दिनांक 22

30-4-2003, मू० 25,000/- रुपये रोकड़ पृष्ठ-14, दिनांक 30-8-2003 व मू० 15,000/- रुपये रोकड़ पृष्ठ-7, दिनांक 20-4-2001 पेशगी के रूप में हैं जो राशि मू० 95,000/- बनती है। इतनी अधिक राशि पेशगी के रूप में प्रधान द्वारा अपने पास रखना वित्तिय नियमों की उल्लंघना है तथा आपत्तिजनक है।

11. एन० जे० पी० सी० अंकेक्षण पत्र का पैरा नम्बर, 2ख (व्यय की ओर टिप्पणियाँ) के क्रम संख्या-1 व 2 के अनुसार एन० जे० पी० सी० से मू० 3.00 लाख रुपये वर्ष 2000 में प्राप्त हुए थे। उक्त राशि में से ग्राम सभा ने 5 विकास कार्यों में राशि व्यय करने की स्वीकृति प्रदान की परन्तु पंचायत ने केवल 1,33,549/- रुपये ग्राम सभा द्वारा पारित योजनाओं में व्यय किए शेष राशि ग्राम पंचायत ने अपनी मर्जी से व्यय किया जो कि आपत्तिजनक है। परन्तु गन अंकेक्षण दिनांक 12-7-2003 को अंकेक्षण को इससे सम्बन्धित रोकड़ तथा बाउचर जानबूझ कर प्रस्तुत न करना नियमों के विरुद्ध है।

12. अंकेक्षण पत्र में क्रम संख्या 5, 6, 7, 8, 9 में वर्णित विभिन्न योजनाओं के मू० 23,216.75 पैसे के बाउचर अपूर्ण पाये गये हैं।

13. जवाहर ग्राम समृद्धि योजना अंकेक्षण पत्र के पैरा नम्बर-2 (ख) (3) में मू० 208.75 पैसे की वसूली प्रधान से की जानी है जो निर्माण कार्य पक्का गस्ता मस्ट्रोल पर अधिक व्यय हुआ है।

उपरोक्त वर्णित आरोपों के अतिरिक्त जांच के दौरान रिकार्ड के निरीक्षण से पाया गया कि मस्ट्रोल संख्या 1/2001, दिनांक 1-2-2003 से 31-1-2003 में मू० 29,958/- रुपये रोकड़ में दर्ज है जबकि मस्ट्रोल द्वारा दी गई राशि का वास्तविक जोड़ कुल 27,521.25 पैसे बनता है। इस प्रकार मू० 2436.75 पैसे का अधिक भुगतान किया गया है।

जांच रिपोर्ट में दर्शाये गये विभिन्न आरोपों के तहत प्रधान द्वारा कुल मू० 1,24,569/- रुपये की राशि का दुरुपयोग किया गया है। इस प्रकार श्री हरबंस सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा से व्याज सहित कुल मू० 1,40,845/- रुपये वसूली योग्य बनती है तथा ग्राम पंचायत सुंगरा के रोकड़ वही पृष्ठ संख्या-16, दिनांक 17-7-2004 अनुसार मू० 1,24,569/- रुपये की राशि प्रधान द्वारा पंचायत खाते में जमा कर दी है तथा व्याज की राशि उनसे वसूली जानी शेष है।

उक्त प्रधान द्वारा बरती गई विभिन्न वित्तीय अनियमितताओं तथा अपने कर्तव्य निर्वहन में आपत्तिजनक कार्य-कलापों के फलस्वरूप हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146(1)(ख) के अन्तर्गत अवचार के दोषी पाये जाने के कारण उन्हें सरकार द्वारा दिनांक 11-8-2005 को निष्कासनार्थ कारण बताओ नोटिस जारी किया गया।

यह कि श्री हरबंस सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा से उक्त कारण बताओ नोटिस का उत्तर दिनांक 7-9-2005 को प्राप्त हुआ। उक्त प्रधान से प्राप्त उत्तर से सरकार संतुष्ट नहीं हुई, क्योंकि उत्तर तथ्यों पर आधारित नहीं है जिसके फलस्वरूप उन्हें हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146(1) के अन्तर्गत विभिन्न वित्तीय अनियमितताओं तथा अपने कर्तव्य निर्वहन में लापरवाही के दोषी पाये जाने के कारण उन्हें प्रधान पद से हटाया जाना उचित है।

अतः राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, उन शक्तियों के अधीन जो कि उन्हें हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 146(1) के अन्तर्गत प्रदत्त है का प्रयोग करते हुए श्री हरबंस सिंह, प्रधान, ग्राम पंचायत सुंगरा को उक्त कृत्यों के लिए प्रधान पद से तुरन्त निष्कासित किया जाता है तथा उन्हें छः वर्ष की कालावधि के लिए उक्त अधिनियम की धारा 146(2) के अन्तर्गत पंचायत पदाधिकारी के रूप में निर्वाचन के लिए निरहित किया जाता है।

शुद्धि-पत्र

शिमला-171009, 19 अक्तूबर, 2005

संख्या पी0 सी0 एच0-एच0 ए0 (4)-9/2005-18154-60.—इस विभाग की अधिसूचना संख्या पी0सी0 एच0-एच0 ए0 (4)-9/2005-11926-12018, दिनांक 8 जुलाई, 2005 तथा संख्या पी0सी0ए0-एच0ए0 (4)-9/2005-15465-15551, दिनांक 20 अगस्त, 2005 के अन्तर्गत, जिला मण्डी के विकास खण्ड सराज की ग्राम सभा थाटा के विभाजन से नई ग्राम सभा बूंग के गठन की प्रस्तावना का प्रकाशन और अन्तिम पुनर्गठन/विभाजन अधिसूचित किया गया था, जिसमें लिपिकीय त्रुटि के कारण 3 ग्रामों का उल्लेख नहीं किया जा सका। अतः लिपिकीय त्रुटि को दूर करने के उद्देश्य से विभागीय अधिसूचना संख्या पी0सी0एच0-एच0ए0 (4)-9/2005-15465-15551, दिनांक 20 अगस्त, 2005, में निम्नलिखित शुद्धि अधिसूचित की जाती है।—

- (1) ग्राम भेखली को वर्तमान ग्राम सभा थाटा में सम्मिलित किया जाता है।
- (2) ग्राम टिकी तथा डी0 पी0 एफ0 रांगचा को नवगठित ग्राम सभा बूंग (जहलगाड़) में सम्मिलित किया जाता है।

आदेश द्वारा,

हस्ताक्षरित/-
सचिव।

शिमला-171002, दिनांक 22 अक्तूबर, 2005

संख्या पी0 सी0 एच0-एच0 ए0 (5) 50/94-18694-700.—इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 22-9-2005 जिसके अन्तर्गत श्रीमती निर्मला देवी, प्रधान, ग्राम पंचायत भगैतर, विकास खण्ड सुलह को हिमाचल प्रदेश पंचायती राज अधिनियम, 1994 की धारा 145 (6) के अन्तर्गत भविष्य में अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहने की चेतावनी दी है, के भाखरी पैरा तथा प्रधान, उप-प्रधान व खण्ड विकास अधिकारी को पृष्ठांकित प्रति में अंकित शब्द 'विकास खण्ड, सुलह' के स्थान पर 'विकास खण्ड, लम्बागांव' पढ़ा जाये अर्थात् श्रीमती निर्मला देवी, प्रधान, ग्राम पंचायत भगैतर, विकास खण्ड लम्बागांव।

हस्ताक्षरित/-
मंयुक्त सचिव।